चुने हुए शेर

डॉ. ऋषिपाल धीमान

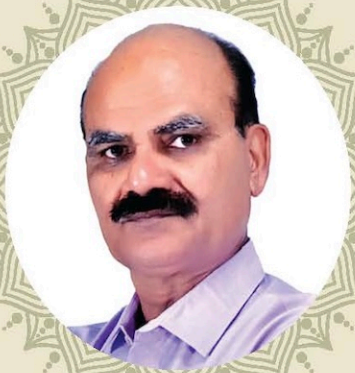

सम्पादन

हरेराम समीप

डॉ. ऋषिपाल धीमान 'ऋषि'

जन्म : 05.07.1957

शिक्षा : एम.एस-सी, पी-एच.डी (रसायनशास्त्र), रुड़की विश्वविद्यालय (अब आई आई टी रुड़की)

डॉ. ऋषिपाल धीमान द्वारा रचित पुस्तकें :

1. 'टैस्टिंग फूड फॉर एडल्ट्रेशन' (अंग्रेजी), 1986, विक्रम साराभाई कम्यूनिटि साइंस सेंटर, अहमदाबाद
2. 'फन विद कैमिस्ट्री' (अंग्रेजी), 1990, विक्रम साराभाई कम्यूनिटि साइंस सेंटर, अहमदाबाद
3. 'शबनमी अहसास' (हिंदी ग़ज़ल-संग्रह), 1996, ऐवाने-ख़्वाब, आगरा
4. 'हवा के काँधे पे' (हिंदी ग़ज़ल-संग्रह), 2000, ध्रुव प्रकाशन, अहमदाबाद
5. 'जो छूना चाहूँ तो..' (हिंदी ग़ज़ल-संग्रह), 2012, लोकमित्र प्रकाशन, दिल्ली
6. 'तस्वीर लिख रहा हूँ' (हिंदी ग़ज़ल-संग्रह), 2019 , बोधि प्रकाशन, जयपुर
7. रास्ता दिल का (हिंदी ग़ज़ल-संग्रह), 2022, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली
8. ओ एन जी सी पारिभाषिक शब्दावली की रचना की जो ओ एन जी सी अहमदाबाद द्वारा प्रकाशित की गई।

डॉ. ऋषिपाल धीमान द्वारा संपादित पुस्तकें :

1. 'संवेदना के स्वर' (काव्य-संकलन)-2002 गुजरात के 75 हिंदी कवियों की कविताओं का संकलन
2. 'उजाले की ओर' (काव्य-संकलन)-2018 गुजरात के 85 हिंदी कवियों की कविताओं का संकलन।

महत्वपूर्ण आलोचना ग्रंथों में डॉ. ऋषिपाल धीमान की उपस्थिति :

1. 'समकालीन हिंदी ग़ज़लकार-एक अध्ययन खंड-4' - हरेराम समीप, 2020, पृ. 265-275, भावना प्रकाशन, दिल्ली
2. 'हिंदी गजल की परंपरा'- हरेराम समीप, 2020, पृ. 326-329 किताबगंज प्रकाशन, गंगानगर

डॉ. ऋषिपाल धीमान को प्राप्त कुछ पुरस्कार व सम्मान :

1. 'श्रेष्ठ पुस्तक पारितोषिक-1996' गुजरात साहित्य अकादमी द्वारा, 'शबनमी अहसास' के लिए
2. 'चकबस्त लखनवी साहित्य सद्भावना पुरस्कार-1997', अंजुमने-मुहिब्बाने-उर्दू, आगरा (उ.प्र.) द्वारा 'शबनमी अहसास' के लिए
3. 'श्रेष्ठ पुस्तक पारितोषिक-2012' गुजरात साहित्य अकादमी द्वारा. 'जो छूना चाहूँ तो...' के लिए
4. 'श्रेष्ठ पुस्तक पारितोषिक-2018' गुजरात साहित्य अकादमी द्वारा, 'उजाले की ओर' के लिए
5. 'श्रेष्ठ पुस्तक पारितोषिक-2019' गुजरात साहित्य अकादमी द्वारा 'तस्वीर लिख रहा हूँ' के लिए
6. 'साहित्य शिरोमणि सम्मान-2022', श्री श्रीसाहित्य सभा, इंदौर (म.प्र.), द्वारा आदि।
7. 'नरसी मेहता-भाषा सम्मान-2022', नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति(बैंक), अहमदाबाद द्वारा

विशेष : 1. गुजरात विश्वविद्यालय में पी एच डी के लिए एक शोध-छात्र के शोध-कार्य में डॉ. ऋषिपाल धीमान की गजलें शामिल हैं। 2. आकाशवाणी, दूरदर्शन तथा अनेक अखिल भारतीय कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ एवं मंच-संचालन।

ईमेल : rishi507dhiman@gmail.com • मो. : 9428330490 (Whatsapp no)

लिटिल बर्ड पब्लिकेशंस
नई दिल्ली
फ़ोन : 99682-88050, 82879-88726
ISBN 978-81-970121-4-3
₹ 160.00

चुने हुए शेर

डॉ. ऋषिपाल धीमान

चुने हुए शेर

डॉ. ऋषिपाल धीमान

सम्पादन

हरेराम समीप

लिटिल बर्ड पब्लिकेशंस

लिटिल बर्ड पब्लिकेशंस

I.S.B.N # 978-81-970121-4-3

4637/20, शॉप नं.-एफ-5, प्रथम तल, हरि सदन,

अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

मो.: 9968288050, 9911866239

ई-मेल: littlebirdinfo21@gmail.com

प्रथम संस्करण : 2024

© डॉ. ऋषिपाल धीमान

आवरण चित्र : ककसाड़ टीम

मुद्रक : श्री बालाजी प्रिंटर्स, दिल्ली

इस पुस्तक के किसी भी अंश को किसी भी माध्यम में प्रयोग करने के लिए लेखक/प्रकाशक से लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है।

समर्पण

हर कार्य में मेरी सहयोगी,
मेरी पत्नी, मेरी प्रेरणा, कवयित्री
रजनी धीमान
को

ग़ज़लाकाश में सितारों की तरह रौशन शेर

–हरेराम समीप

डॉ. ऋषिपाल धीमान समकालीन हिन्दी ग़ज़ल के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं। उनकी लगभग चार दशक लम्बी ग़ज़ल-यात्रा में अब तक उनके पाँच ग़ज़ल संग्रह प्रकाशित हैं और लगातार चर्चा में रहे हैं, वे हैं– 'शबनमी अहसास', 'हवा के कांधे पे' तथा 'जो छूना चाहूँ तो', तस्वीर लिख रहा हूँ और रास्ता दिल का'। इन संग्रहों की समीक्षाओं में उद्धृत अनेक शेर लोगों की जुबाँ पर आते रहे हैं और उनके शेरों की इसी उद्धरणशीलता से प्रेरित हो कर उनके लगभग पांच सौ चर्चित शेरों को उनके सभी संग्रहों से चुन कर इस संकलन में एकत्रित किया गया है, जो उनकी शायरी की रचनात्मकता की उत्कृष्टता का प्रमाण देते हैं।

इस संकलन में ऐसे अनेक शेर हैं, जो पाठकों को लगेंगे, जैसे ये उनके अपने दिल की बात कर रहे हैं। ऐसे आत्मीय शेर सदैव स्मरणीय और अनुकरणीय होते हैं। जहाँ तक कथ्य का प्रश्न है, डॉ. धीमान अपने लेखकीय सरोकारों के प्रति पूर्णतः जागरुक नज़र आते हैं। ग़ज़लकार ने अपने परिवेश जैसे घर-परिवार, समाज, प्रकृति, धर्म, राज़नीति आदि बहुविध क्षेत्रों से सम्बंधित विभिन्न विचारों और भावनाओं को अपनी ग़ज़लों के शेरों में बखूबी ढाला है। विशेष रूप से पारिवारिक सम्बंधों को लेकर उनके बड़े ही आत्मीय व भावपूर्ण शेर अवतरित हुए हैं। बावजूद इसके डॉ. धीमान की ग़ज़लगोई का प्रधान स्वर सामाजिक, सांस्कृतिक सरोकारों से ही ऊर्जस्वित है।

धीमान की ग़ज़ल-भाषा सहज, बोधग़मय और सामान्य बोलचाल की जनभाषा है। यह भाषा ग़ज़लकार की अवाम के प्रति गहरी प्रतिबद्धता को स्थापित करती है। उनके ये शेर हिन्दी ग़ज़ल की उर्वर ज़मीन तैयार करते नज़र आते हैं, जो समकालीन हिन्दी ग़ज़ल परिदृश्य को और हरा-भरा बनाती है। ये शेर वैयक्तिक और सामाजिक अर्थात गाँव और शहर के इंसान के आत्मसंघर्ष